Notes

1. सामाजिक उद्देश्य एवं लक्ष्य — प्रत्येक पाठ्यक्रम में सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति एवं उपायों का वर्णन किया जाता है। उनको पाठ्यक्रम को मान्यता प्राप्त की जाती है। जिसमें साथ विकास की भावना निहित होती है। और सामाजिक विकास की गतिविधियों के भी समाहित किया जाता है।

दार्शनिक उद्देश्य एवं लक्ष्य — अनेक अवसरों पर समाज एवं राष्ट्र विभिन्न प्रकार के दार्शनिक विचार धाराओं को प्रभावित किया जाता है। इस लिए पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है।

जैसे - आदर्शवादी, प्रकृतिवादी, एवं विभिन्न प्रकार की प्रयोजनवादी विचार धाराएँ का उदाहरण है।

सांस्कृतिक उद्देश्य एवं लक्ष्य — प्रत्येक राष्ट्र समाज एवं संस्कृति एवं उससे सम्बन्धित परम्पराओं का विशेष लगाव होता है। अपने सांस्कृतिक उद्देश्यों के विकास के लिए शिक्षा का सहारा लेता है। पाठ्यक्रम संस्कृति गतिविधियों

Scanned with CamScanner

Notes

का समावेश होता है।

शैक्षिक उद्देश्य एवं लक्ष्य :- राष्ट्रीय लक्ष्य एवं उद्देश्यों की पूर्ति का महत्वपूर्ण भूमिका रहे हैं। और पाठ्यक्रम के विभिन्न अंगों का समावेश किया जाता है। और विभिन्न प्रकार की आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। भारतीय राष्ट्रीय आकांक्षा - आदर्श, मानवता नैतिकता, विश्वबन्धुत्व के गुणों से सम्बन्धित गुणों का समावेश होता है।

अभिभावकों के लक्ष्य एवं उद्देश्य अभिभावकों के भी पाठ्यक्रम को विकसित करने का महत्व पूर्ण भूमिका निर्धारण करता है। प्रत्येक अभिभावक वर्तमान समय में ~~तकनीकी~~ तकनीकी ज्ञान प्रदान करता है। पाठ्यक्रम तकनीकी ज्ञान को समाहित करता है। इस प्रकार अभिभावक आकांक्षा लक्ष्य एवं उद्देश्यों की पूर्ति पाठ्यक्रम पर निर्धारित होती।

वैश्वीकरण के लक्ष्य एवं उद्देश्य - वैश्वीकरण के शैक्षिक उद्देश्यों

Scanned with CamScanner

Notes

एवं सहयोग पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया सम्पन्न होती है।
उदाहरण वैश्विक स्तर शिक्षा सार्वभौमिकरण एवं पर्यावरणीय शिक्षा का महत्व प्रदान किया जाता है।
जैसे - वैश्विक स्तर पर के सार्वभौमिकरण एवं पर्यावरणीय शिक्षा को महत्व प्रदान किया जाता है।

पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त

Principal of curriculum construction

जीवन से सम्बन्धित होने का सिद्धान्त इस सिद्धान्त के अनुसार पाठ्यक्रम के अन्तर्गत उन्हीं विषय - सामग्रियों का समावेश किया जाय जो बालकों के वर्तमान जीवन सम्बन्धित हों जिससे वह अपने जीवन की समस्याओं को अच्छी तरह समझ सके

~~संस्कृति तथा सभ्यता के~~ अग्रदर्शिता का सिद्धान्त - पाठ्यक्रम एवं विषयों, क्रियाओं एवं कार्यों का समावेश किया जाये जिसके द्वारा बालक अपने संस्कृति एवं सभ्यता को अच्छी तरह समझ सकें।

~~अग्रदर्शिता का सिद्धान्त~~

व्यक्तिगत ~~शिक्षा~~ विभिन्नताओं का ~~सि~~ सिद्धान्त यह ~~शिक्षा~~ सिद्धान्त के अनुसार पाठ्यक्रम कठोर न

Notes

होकर के लचीला होना चाहिए जिससे उससे बालको को अपनी खेल प्रवृत्ति को अभिव्यक्ति करने का अवसर प्रदान किया जाय

खेल एवं कार्य का सिद्धान्त खेल बालक की जन्मजात प्रवृत्ति होती है। यह पाठ्यक्रम के निर्धारण में बालको से जो भी कार्य करवाने तथा सिखाने की योजना बनायी जाये, उसमे बालको की खेल प्रवृत्ति का अवसर प्रदान किया जाये। और बालक जो भी कार्य करे उसमे उसको आनन्द एव अनुभव प्राप्त हो।

जीवन क्रियाओ का सिद्धान्त :- बालको के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओ तथा शारीरिक, मानसिक, समाजिक, नैतिक पक्ष के विकास के लिए पाठ्यक्रम में सम्बन्धित क्रियाओ का समावेश होना है

सहसम्बन्ध का सिद्धान्त पाठ्यक्रम में जो भी विषय निर्धारित किये जाय उनमे सह सम्बन्ध हो जिससे बालक जो भी ज्ञान प्राप्त करे वह परस्पर सम्बन्धित हो